डेली कॉलेज, जूनियर स्कूल

हिंदी सामूहिक कविता पाठ – 2018-19

कक्षा VI A

अमर सेनानी भगत सिंह

यहीं, कहीं अंकित समाधि में,
भगत सिंह की अमर कहानी।
देता है इतिहास गवाही,
वह था एक महाबलिदानी।

अपना सब कुछ दाँव लगाकर,
बना क्रांति का सफल सिपाही।
काँप गया अंग्रेज़ी शासन,
उसने ऐसी हाँक लगाई।

उसने संयम औ साहस का,
पाठ पढ़ा था स्वयं पिता से।
सुनी क्रांति की अनगिन लोरी,
झूले पर ही दादी माँ से।

बचपन से ही जिसके मन में,
भाव भरे थे कुर्बानी के।
जिसने बदले लिए भयानक,
अंग्रेज़ों की बेमानी के।

इंकलाब जिसका नारा था,
आज़ादी थी जिसको प्यारी।
मरते दम तक रहा गुँजाता,
जय जय से यह धरती सारी।

Scanned by CamScanner

अंग्रेज़ों का दर्प चूर कर,
जब तक जिया, रहा स्वाभिमानी।
स्वयं मौत को हँसते-हँसते,
वरण किया ऐसा था मानी।

क्रांति वीर था, सच्चा सैनिक,
भय का उसमें नाम नहीं था।
संघर्षों में यौवन बीता,
क्षण भर का आराम नहीं था।

अमर शहीदों की समाधि को,
माथ नवाते आए हैं हम।
उनके बलिदानों को सदैव,
शीश झुकाते आए हैं हम।

Scanned by CamScanner